डॉ. स्वतन्त्र जैन
मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता

आपकी उलझनें–हमारे प्रयास–32

ननद-भावज - लाएं अपने रिश्तों में मिठास

आकाशवाणी कुरुक्षेत्र से प्रसारित की गई वार्ता

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के विभिन्न पड़ावों में कई तरह की समस्याओं एवं मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक व स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं के अलावा मनुष्य के जीवन में कुछेक ऐसी समस्याएं भी आती हैं, जिन्हें हम अपने भाई-बहन, माता-पिता अथवा यार दोस्तों से सांझा नहीं करना चाहते या कर नहीं सकते। ऐसे में हमें एक ऐसे राहगीर की तलाश रहती है, जिसके सामने हम अपने मन को खोलकर रख सकें। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अपने प्रिय पाठकों की ऐसी समस्याओं के समाधान हेतु अर्थ प्रकाश में **'आपकी उलझने-हमारे प्रयास'** नाम से एक कालम प्रारंभ किया गया है। इस कॉलम में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग से **सेवानिवृत्त प्रोफेसर व एक अनुभवी एवं व्यापक दृष्टिकोण वाली मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता-डॉ. स्वतंत्र जैन** हर मंगलवार किसी महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं सामयिक विषय पर एक आलेख देंगी तथा इसके साथ-साथ पाठकों के प्रश्नों/समस्याओं का समाधान बताते हुए उत्तर भी देंगी। पाठकों से अनुरोध है कि अपने प्रश्न/समस्याएं अर्थ प्रकाश कार्यालय में भेज दें।

-सम्पादक

रिश्ता कोई भी हो, किसी से भी हो, हर रिश्ते की डोर बड़ी नाजुक होती है। पर हर रिश्ता बनाना, उसे सहेजना और उसमें अपने प्यार की मिठास घोलते रहना इतना सहज नहीं है। हमें हर रोज़ अख़बारों की सुर्खियों में कभी नई नवेली दुल्हन को अपनी क्रूर सास-ननद के हाथों जलाने के समाचार देखने को मिलते हैं तो कभी एक भाई द्वारा दूजे भाई की हत्या करने का समाचार, पुत्र द्वारा पिता या पिता द्वारा पुत्र को मारने का समाचार या फिर किसी पति द्वारा अपनी पत्नी और पत्नी द्वारा अपने पति को मारने का समाचार पढ़ने-सुनने को मिलता रहता है। ऐसा नहीं है कि यह सब किसी विशेष वर्ग, समुदाय, धर्म, जाति, गांव, शहर या फिर किसी अछूते से प्रदेश तक ही सीमित हो, बल्कि रिश्तों का यह उत्पीड़न तो प्रत्येक वर्ग, धर्म, समुदाय, जाति व हर गांव-शहर में होता आया है और यह सिलसिला बढ़ता ही जा रहा है।

पारिवारिक व सामाजिक रिश्तों में ननद भौजाई का रिश्ता बहुत अहम माना जाता है। परन्तु गांव हो या शहर, उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम, हिन्दुस्तान में तो नई भौजाइयां अपनी ननदों से डरती ही हैं। शायद इसलिये कि ननदों की क्रूरता ज्यादा देखने व सुनने को मिलती है। ननद-भावज के रिश्ते में इतनी अधिक कड़ुवाहट कि वे एक-दूसरे की जड़ें काटने में लगी रहती हैं जिससे पूरे परिवार की शांति भंग हो जाती है। आख़िर क्यूं?

शायद इसीलिये कि ननद ने घर में आने वाली परायी लड़की का जी भरकर स्वागत नहीं किया, उसे अपनाया और स्वीकारा नहीं, उसको जानने-समझने का प्रयास नहीं किया और उसकी अनजानी भूलों को नादानी समझ कर माफ नहीं किया। क्या इन सबका अभिप्रायः यह मान लिया जाए कि ननद-भौजाई के रिश्ते में कभी मिठास हो ही नहीं सकती? नहीं, कतई नहीं! ननद भौजाई का रिश्ता भी किसी अन्य रिश्ते की तरह ही पूर्ण मिठास युक्त बन सकता है, बशर्ते रिश्ता निभाने की कला आती हो।

किसी भी रिश्ते को मधुर व कामयाब बनाने के लिये दोनों को ही परस्पर विश्वास, आदर-सत्कार, प्यार-सहयोग व एक-दूसरे को समझने की भावना की आवश्यकता है। एक-दूजे की भूलें नज़रान्दाज़ और क्षमा करके अच्छे से समझने की ज़रूरत है। परन्तु रिश्ता निभाने के लिये दोनों तरफ से ही पहल करने की भावना का होना तथा हाथ मिलाने की तरह दोनों ओर से ही हाथ बढ़ाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

ननद-भौजाई के रिश्ते को मधुर बनाने के लिये जहां आरम्भ में ननद की भूमिका अधिक होती है, वहीं बाद में इसको मधुर बनाए रखने के लिये भोजाई की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। आरम्भ में ननद की भूमिका इसलिये अधिक महत्वपूर्ण होती है क्योंकि भोजाई तो पराए घर में आती है अपने बाबुल का घर संसार छोड़ कर! वह संसार, जहां उसे असीम प्यार मिला, उसके हर नाज़ नख़रे पूरे किये गये हों।

जीवन के प्रारम्भिक 20-25 वर्षों में उसकी अपनी आदतें, अपने संस्कार, अपने शौक, काम करने के ढंग आदि बन जाते हैं, जिन्हें आसानी से एकदम बदला नहीं जा सकता। परंतु ससुराल में आते ही यदि उससे नए माहौल में एकदम से ढलने की अपेक्षा की जाए तो यह सही नहीं। यहां ननद ही ऐसा माध्यम हो सकती है जो बिना मज़ाक उड़ाए, बिना ताने दिये, बिना उपेक्षा भाव के अपनी भौजाई को अपने घर के तौर-तरीकों, घर में प्रत्येक सदस्य की आदतों व उनकी उससे अपेक्षाओं के बारे में बता सकती है। यही नहीं, भौजाई यदि कोई काम-काजी महिला हैं, तो उसका हाथ बंटा कर उसकी मुश्किलों को आसान कर उसका दिल जीत सकती है।

और यदि ननद-भौजाई हम उम्र हैं तो कहना ही क्या? तब तो दोनों एक-दूसरे की मित्र, शुभचिन्तक, हमराज और ना जाने क्या-क्या बन सकती हैं। फिर भौजाई भी धीरे-धीरे अपने आप को नए माहौल में ढालने के बाद ननद को अपना बनाए रखने के लिये अनेकों तरह से योगदान कर सकती है। जवानी की दहलीज़ पर ननद के भटके कदमों को संभालने में भौजाई के योगदान की गाथाओं की कोई कमी नहीं। इसमें भी कोई शक नहीं कि भौजाई ने कई बार अपने आप को जोखिम में डालकर असामाजिक तत्वों से ननद के मान-मर्यादा की रक्षा की है।

भौजाई के ससुराल में आने के बाद ननद भौजाई के लिये एक हौवा बनने के बजाए एक ऐसा माध्यम बन सकती है जो अपनी भौजाई व सास, भौजाई व देवर-जेठ एवं भौजाई व भाई के बीच संवादात्मक अन्तर व ग़लतफहमी को दूर करने में सहायक बनकर उसकी हमदर्द बने। परन्तु देखने-सुनने में प्रायः उल्ट ही नज़र आता है। बहुत सी ननदे ही भौजाई के उत्पीड़न का कारण बनती हैं। वे सकारात्मक भूमिका निभाने के बजाए नकारात्मक भूमिका निभा कर भौजाई को अपने भाई तथा मां के हाथों हर समय नीचा दिखाने की कोशिश में रहती हैं। भाभी की सुख-शांति उन्हें पल भर भी रास नहीं आती। स्वयं लड़की होते हुए, स्वयं किसी की भौजाई होते हुए भी वे अपनी भौजाई को सहन नहीं करती। ऐसी ननदों को भौजाई के सुख-चैन से कोई सरोकार ना हो कर उन्हें अपमानित करने-करवाने में अजब सा आनंद मिलता है। कितनी सोचनीय, निन्दनीय व अशोभनीय बात है कि जिस लड़की ने स्वयं आगे जाकर किसी अन्य की भोजाई बनकर ही जीना है वह अपनी भौजाई को निरंतर उत्पीड़ित करने के बारे ही सोचती रहे।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ननद-भावज के बिगड़ते और कड़वाहट भरे रिश्ते एक सामाजिक समस्या ही नहीं वरन एक भावात्मक समस्या भी है जो पारिवारिक जीवन से जुड़े प्रत्येक पहलु और हर सामाजिक ताने-बाने को अस्त-व्यस्त कर सकती है, क्योंकि ननद-भावज के आपसी मन-मुटाव से संपूर्ण परिवार की शांति व उनसे जुड़े सदस्यों का मानसिक स्वास्थ्य प्रायः ख़राब रहने लगता है जिसका परिणाम सारे परिवार व समाज को भुगतना पड़ता है।

रिश्तों के इस मनमुटाव के पीछे अहंकार ईर्ष्या-द्वेष, लोभ-लालच, इक-दूजे को सहन ना करने की प्रवृति व अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाएं हैं। संवादात्मक अंतर भी एक महत्वपूर्ण कारण है। कई बार ऐसा होता है कि दोनों एक-दूसरे को प्यार तो करते हैं, पर ननद ने जो कहा या चाहा, भावज ने उसे गलत समझा। बस, यहीं से दोनों में ग़लत-फहमी बढ़नी शुरु हो जाती है। और किसी भी किस्म की ग़लतफहमी को होने और बढ़ने से रोकने के लिये शुरु में ही इसे दफन व दूर करने का प्रयास करते रहने में ही दोनों की समझदारी है।

जहां रिश्ता बनाना एक कला है, वहां ननद-भावज के पारिवारिक-सामाजिक रिश्ते को संजोकर मधुरता प्रदान करना उससे भी बड़ी कला है। इन दोनों के रिश्तों की डोर अन्य सभी रिश्तों की तरह नाजुक और फूल की तरह कोमल होती है। इस रिश्ते की परवरिश में जितनी कला, सतत प्रयास व त्याग की आवश्यकता है उतनी उसकी अहमियत नहीं समझी जाती। रिश्तों में कड़ुआहट इसी लिये आती है कि इसे निभाने के लिये दोनों ओर से जितने आत्म विश्लेषण की, जितना इक-दूजे की कमज़ोरियों व भूलों को सहन करने की व जितने माप-तोल कर चलने की ज़रूरत है, चला नहीं जाता, जितना अहंकार जलाने की ज़रूरत है, जलाया नहीं जाता।

अन्त में ननदों व भौजाइयों से यही अपील करना चाहूंगी कि अपने रिश्तों की महिमा, गरिमा, आन, बान व शान तथा उनकी आयु व मिठास को बढ़ाना है तो, क्षमाशील एवं सहनशील बनकर धैर्य दिखलाना होगा, इक-दूजे को जानना, समझना, स्वीकारना और झेलना होगा। इस रिश्ते की आन की ख़ातिर, इसे बदनामी से बचाने ख़ातिर, हर ननद-भावज को इक-दूजे की ज़रूरत व प्रेरणा बनना होगा।

*** ***